

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 18, भाग 1

2 राजा 3-4, भाग 1

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

ज़मीन पर वाचा। मैंने हाल ही में इस बारे में बात नहीं की है, लेकिन राजाओं की किताबों में, हम देखते हैं कि इस्राएल ने अपनी वाचा को कैसे पूरा किया जो पहली बार माउंट सिनाई पर परमेश्वर के साथ की गई थी। शीर्षक, ज़मीन पर वाचा, थोड़ा व्यंग्यात्मक है क्योंकि, एक तरफ, यह ज़मीन पर संचालन में वाचा है।

लेकिन दूसरे अर्थ में, यह वाचा है जो ज़मीन पर गिर गई है, जैसा कि हम बार-बार देखते हैं कि इस्राएल के राजा और यहूदा के कई राजा अपनी वाचा को निभाने में विफल रहे हैं। हम इस बार एलिय्याह और एलीशा की कहानी देख रहे हैं।

मैंने पहले भी तर्क दिया है और आज भी यही कहना चाहता हूँ कि ये दो अलग-अलग मंत्रालय नहीं हैं। यह वास्तव में दो अलग-अलग चरणों में एक मंत्रालय है, जिसमें दो अलग-अलग केंद्रीय व्यक्ति हैं। फिर भी, एक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि बाल उत्तरी राज्य, इज़राइल और, विस्तार से, दक्षिणी राज्य, यहूदा के परमेश्वर के रूप में यहोवा की जगह न ले।

तो, हमने पिछली बार एलिय्याह के जीवनकाल और सेवकाई के समापन और एलीशा के परिचय को देखा था। अब हम आज अध्याय तीन और चार को देखते हुए आगे बढ़ते हैं, और हम एलीशा की सेवकाई को देख रहे हैं और विशेष रूप से जिसे हम चमत्कारी कहेंगे। हम मोआब पर हमले से शुरू करते हैं।

जैसा कि पुस्तिका से पता चलता है, अहाब की मृत्यु के बाद मोआब ने अहाब के विरुद्ध विद्रोह किया या, क्षमा करें, इस्राएल के विरुद्ध विद्रोह किया। हमें बताया गया है कि अध्याय तीन की आरंभिक आयतों में, आयत चार के बाद और उसके बाद मोआब दाऊद के समय से इस्राएल के अधीन रहा है। और इसलिए, कुछ सौ वर्षों या उससे अधिक समय तक, लगभग 200 वर्षों तक, मोआब इस्राएल के अधीन रहा है।

लेकिन अब, अहाब की मृत्यु के साथ, उन्हें अपना अवसर दिखाई देता है, और वे विद्रोह कर देते हैं। आपको याद होगा, अहाब की जगह उसके बेटे अहज्याह ने ले ली थी, लेकिन उसने केवल छह महीने ही शासन किया था, उसके बाद वह मंदिर में जालीदार ढांचे से गिरकर घायल हो गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। और उसकी जगह उसके भाई, अहाब के दूसरे बेटे, योराम या योराम ने ले ली।

और ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत जल्दी, योराम ने मोआब पर फिर से नियंत्रण पाने की कोशिश की। उसने यहूदा के राजा यहोशापात को बुलाया, ताकि वह उसकी और यहोशापात की सहायता करे, उन्हीं शब्दों में जो यहोशापात ने अपने पिता के साथ कहे थे। अहाब ने कहा, ओह, मैं तुम्हारा आदमी हूँ।

मैं तुम्हारे साथ हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है वह तुम्हारा है। हम आगे कैसे बढ़ेंगे? और योराम ने कहा कि हम दक्षिण की ओर जा रहे हैं।

अगर हम नक्शे को देखें तो मोआब मृत सागर के पूर्वी किनारे पर है। इसलिए, सामरिया से यहाँ तक पहुँचने का सबसे आसान तरीका यहाँ से नीचे उतरना और उत्तर से हमला करना है। लेकिन जेहोराम कहता है, नहीं, मैं दक्षिण की ओर जाना चाहता हूँ।

मैं यहूदा से होकर जाना चाहता हूँ, और मैं एदोम से होकर आना चाहता हूँ। एदोम, इस समय, अभी भी यहूदा का एक जागीरदार है। और इसलिए आपके पास तीन राजा हैं, इस्राएल का राजा, यहूदा का राजा और एदोम का राजा।

इसलिए, वे इस पर विचार कर रहे हैं। शायद एक आश्चर्यजनक हमले का विचार या फिर यह भी कि दक्षिणी सीमा की रक्षा उत्तरी सीमा की तुलना में बहुत कमज़ोर थी। तो यही विचार है।

हम दक्षिण से आ रहे हैं। लेकिन बाइबल हमें बताती है कि सात दिन की यात्रा के बाद, वे बिना पानी के थे। अब, मैं चाहता हूँ कि आप जेहोराम के बारे में कुछ बातें ध्यान दें।

ध्यान दें कि, सबसे पहले, वहाँ दूसरे और तीसरे पद में, उसने यहोवा की नज़र में बुरा किया, लेकिन वैसा नहीं जैसा उसके पिता और माँ ने किया था। अहज्याह के बारे में कहा गया है, हाँ, उसने वही काम किए जो उसके पिता और माँ ने किए थे। लेकिन जेहोराम, किसी भी कारण से, बाल की उस बहुत ही तीव्र पूजा से थोड़ा पीछे हट रहा है।

और वास्तव में, हमें बताया गया है कि उसने बाल के पवित्र पत्थर को हटा दिया था जिसे उसके पिता अहाब ने बनवाया था। तो, यहाँ यहोवा के प्रति भक्ति और वफ़ादारी का भाव है। दिलचस्प है।

लेकिन जब संकट आता है, जब वे पानी से बाहर होते हैं, तो उसकी प्रतिक्रिया देखें। वह कहता है, क्या प्रभु ने, यह श्लोक 10 में है, क्या प्रभु ने हम तीन राजाओं को केवल इसलिए बुलाया है कि हमें मोआब के हाथों में सौंप दें? वह अपने और अपने दो साथियों के प्रति यहोवा की प्रेरणा के बारे में क्या सोचता है? वह सोचता है कि यहोवा उसे पकड़ने के लिए तैयार है। जब भी कुछ बुरा होता है, ओह, यहोवा मुझे पकड़ने के लिए तैयार है।

यह कहाँ से आता है? यह दोहरी मानसिकता से आता है। हमने इस बारे में पहले भी बात की है। विचार यह है कि मैं एक पैर यहोवा में रखना चाहता हूँ, लेकिन मैं एक पैर दुनिया में भी रखना चाहता हूँ।

जब आप ऐसा करते हैं, जब भी कुछ बुरा होता है, तो यह कहने की प्रवृत्ति होती है, ओह, भगवान मुझे पकड़ने के लिए बाहर है। यही यहाँ हो रहा है। और हम इस स्थिति में इस तरह का रवैया देखते हैं।

भगवान पर भरोसा करने का एकमात्र तरीका है। उसके लिए पूरी तरह समर्पित होना। तब, आप जानते हैं कि यदि कठिनाई या बुराई या समस्याएँ आपके पास आती हैं, तो निश्चित रूप से वे यहोवा के हाथों से आई हैं। उसकी अनुमति के बिना हमारे साथ कुछ भी नहीं होता है।

लेकिन उसके हाथों से आने के बाद, उसने अच्छी योजना बनाई है। और आप यहोशापात के जवाब में इसका थोड़ा सा हिस्सा देख सकते हैं। यहोशापात ने पूछा, क्या यहाँ यहोवा का कोई नबी नहीं है जिसके ज़रिए हम यहोवा से पूछ सकें? खैर, आइए जानें कि यहाँ परमेश्वर के मन में क्या है। आइए जानें कि परमेश्वर इस समस्या के ज़रिए हमारे लिए या हमारे साथ क्या करने का इरादा रखता है।

मुझे लगता है कि योराम और यहोशापात की दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, जब विपत्ति आती है। अगर हमारा दिल पूरी तरह से उसका है, तो हमारी प्रतिक्रिया होगी, हे प्रभु, आप इसके ज़रिए क्या करना चाहते हैं? आप इसके ज़रिए क्या हासिल करना चाहते हैं? वास्तव में।

इस घटना ने यहोवा को अपने लोगों के लिए अपने दिव्य प्रावधान को प्रदर्शित करने का अवसर दिया। एक बार फिर, मैं यहाँ बहुत सावधान रहना चाहता हूँ। मैं यह नहीं कहना चाहता कि परमेश्वर आपके जीवन में मुसीबत भेजता है।

वह उस तरह का ईश्वर नहीं है, लेकिन क्या ईश्वर हमारे जीवन में मुसीबत आने देता है? हाँ, वह आने देता है। हाँ, वह आने देता है। और जब वह आने देता है।

उसके पास अपनी शक्ति, अपनी देखभाल और शायद हमें इसके सामने खड़े होने में सक्षम बनाने की क्षमता प्रदर्शित करने की क्षमता है। लेकिन अगर यह हमारे पास आता है, तो यह इसलिए नहीं आता है क्योंकि भगवान हमें पकड़ने के लिए बाहर हैं। अब, अगर हम दोहरी सोच वाला जीवन जी रहे हैं, तो यह अच्छी तरह से हो सकता है कि भगवान हमें चौंकाने के लिए, हमें वापस अपने पास बुलाने के लिए उस बुराई को आने की अनुमति देता है।

लेकिन उसके मन में हमेशा अच्छे उद्देश्य होते हैं। यही बात जेम्स भी कहता है जब वह कहता है, कभी मत कहो कि तुम परमेश्वर द्वारा परीक्षा में डाले जा रहे हो। अब, यह एक तरह का पेचीदा कथन है क्योंकि हिब्रू में, परीक्षण करना और परीक्षा देना वास्तव में एक ही अवधारणा है; वे एक ही शब्द हैं। हमने अंग्रेजी में, बेशक, इन प्रलोभनों को बुराई करने के लिए प्रेरित करने के अर्थ में विभाजित किया है, और जेम्स बिल्कुल सही है जब वह कहता है, कभी मत कहो कि परमेश्वर तुम्हें गलत काम करने के लिए प्रेरित करने के अर्थ में परीक्षा में डाल रहा है। दूसरी ओर, क्या परमेश्वर हमारी परीक्षा लेता है? ओह, हाँ।

और यही पौलुस का मतलब है जब वह कहता है कि तुम पर कोई परीक्षा नहीं आई, बल्कि ऐसी परीक्षा आई जो मनुष्य के लिए सामान्य है। आपके जीवन में जो भी परीक्षा आए, जो भी चुनौती आए, जो भी कठिनाई आए, परमेश्वर ने आपको उससे बचने का रास्ता दिया है, उससे विजय पाने का रास्ता दिया है।

तो यही अंतर है। क्या ईश्वर हमारी परीक्षा लेता है? हाँ, वह लेता है। क्या वह हमें हमारे आधुनिक अंग्रेजी अर्थ में परीक्षा में डालता है? नहीं, कभी नहीं।

तो, असल में, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि यह एक परीक्षा है, लेकिन जोराम कहते हैं, भगवान हमें पकड़ने के लिए बाहर हैं। भगवान हमें यहाँ हमें पकड़ने के लिए लाए हैं। वह इस तरह का भगवान है।

आप उस पर भरोसा नहीं कर सकते। जोसेफ़ कहते हैं, रुको, रुको, रुको, आइए जानें कि परमेश्वर यहाँ क्या करने की योजना बना रहा है। अब, यह दिलचस्प है।

यहोशू को नहीं पता कि एलीशा उनके साथ है। योराम को नहीं पता। लेकिन अधिकारियों में से एक को पता है।

कितना दिलचस्प है। एलीशा स्पष्ट रूप से खुद को या अपनी उपस्थिति को लेकर कोई बड़ा मुद्दा नहीं बना रहा है, और हम नहीं जानते कि वह क्यों साथ है। क्या प्रभु ने उसे साथ जाने के लिए कहा था या कुछ और, हम नहीं जानते।

लेकिन एलीशा बहुत ही स्पष्टवादी है। वह योराम से कहता है, अच्छा, तुम अपने पिता और अपनी माँ के देवताओं को क्यों नहीं आजमाते? तुम उन भविष्यवक्ताओं को क्यों नहीं आजमाते? फिर से, हम यहाँ एक दोहरे दिमाग वाले व्यक्ति से निपट रहे हैं। वह आगे कहता है, अगर यहाँ योसाफ़त न होता, तो मेरा तुमसे कोई लेना-देना नहीं होता।

वूफ़। लेकिन वह कहता है, क्योंकि जोसफ़ैट यहाँ है, मैं करूँगा। और यह दिलचस्प है।

बाइबल में यह एक ऐसा स्थान है जहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्यवक्ता किसी तरह की समाधि अवस्था में जाने की कोशिश कर रहा है। उसने एक वीणावादक को बुलाया और संगीत बजाने के लिए कहा। अब, यह प्राचीन दुनिया के भविष्यवक्ताओं के बीच आम बात है।

वे प्रेतबाधित होना चाहते हैं। और मैं आपको यहाँ केवल सावधान करना चाहूँगा। इसमें यह नहीं लिखा है कि वह प्रेतबाधित होना चाहता था।

उन्होंने बस इतना कहा। संगीत बजाने के लिए किसी को साथ ले आओ। इसलिए सावधान रहें कि हम इनमें से कुछ अंशों को कितना पढ़ते हैं, लेकिन किसी भी मामले में, यह एकमात्र जगह है।

बाकी हर जगह ईश्वर और पैगंबर के बीच एक सीधा संवाद है, ईश्वर पैगंबर को अपना वचन देता है और पैगंबर फिर उस वचन को दुनिया तक पहुंचाता है। और इसलिए, वह कहता है, आप इसे श्लोक 17 में नहीं देखेंगे, आप हवा या बारिश नहीं देखेंगे। फिर भी यह घाटी पानी से भर जाएगी, और आप, आपके मवेशी और आपके जानवर पीएंगे।

प्रभु की नज़र में यह एक आसान काम है। और वह यहीं नहीं रुकने वाला है। वह मोआब को तुम्हारे हाथों में सौंपने जा रहा है।

इसलिए, परमेश्वर ने आपको इस स्थिति में इसलिए लाया है ताकि वह अपने शक्तिशाली प्रावधान को प्रदर्शित कर सके। वह आपको इन परिस्थितियों में इसलिए लाया है ताकि आपको याद दिला सके कि वह आपके पक्ष में है और आपके लिए है। अब, फिर से, अगर हम अपने नक्शे को देखें, तो मोआब, माफ़ कीजिए, एदोम और एदोम मृत सागर के अंत के आसपास यहूदा के दक्षिण की भूमि है।

इस घाटी के पूर्वी हिस्से में पहाड़ बहुत सूखे हैं, बहुत, बहुत सूखे हैं। इसलिए यह तथ्य कि वहाँ पानी नहीं था, आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन यह तथ्य कि ज़मीन पर पानी बह रहा होगा।

ओह, भगवान। कितना अद्भुत है। अब, फिर से, जब हम चमत्कारों के बारे में बात करते हैं, तो हम कहते हैं कि क्या हम किसी तरह की प्राकृतिक व्याख्या पा सकते हैं।

आह, ठीक है, ठीक है, मुझे बहुत बेहतर महसूस हो रहा है। यह वास्तव में चमत्कार नहीं था। यह संभव है कि इन पहाड़ियों में बहुत तेज़ बारिश हुई हो।

और जैसा कि लगभग हर रेगिस्तान में होता है, आपको अचानक ज़मीन से पानी बहता हुआ दिखाई देगा। और यह बहकर नीचे घाटी में भर गया। लेकिन यह मुद्दा नहीं है।

चमत्कार का मुद्दा यह नहीं है कि कैसे। चमत्कार का मुद्दा यह है कि कब और किस हद तक। जब भगवान ने कहा कि यह होगा, तो यह हुआ।

और यह इस हद तक हुआ कि परमेश्वर ने कहा कि जहाँ पानी पूरी ज़मीन पर बह रहा है। वह हमारा परमेश्वर है। अब, अगला श्लोक, श्लोक 18, परेशान करने वाला है।

क्षमा करें, श्लोक 19. तुम हर गढ़वाले शहर और हर बड़े कस्बे को नष्ट कर दोगे। तुम हर अच्छे पेड़ को काट डालोगे, सभी झरनों को बंद कर दोगे, और हर अच्छे खेत को पत्थरों से बर्बाद कर दोगे।

ओह, भगवान ऐसी चीज़ों का आदेश क्यों देंगे? अच्छा, भाषा पर गौर करें। वह ऐसा आदेश नहीं देते।

यह इस बात का अवलोकन है कि वे क्या करने जा रहे हैं। अब, निश्चित रूप से, वे बहुत अच्छी तरह से कह सकते हैं, ठीक है, पैगंबर ने कहा कि हम ऐसा करने जा रहे हैं। इसलिए, हम ऐसा करने जा रहे हैं।

मुझे नहीं लगता कि हमें इसे बहुत आगे ले जाने की ज़रूरत है। लेकिन बाद में, एलीशा सीरिया के राजा हेज़ल को देखेगा, जिसे एलीशा सीरिया का अगला राजा बनने के लिए अभिषेक कर रहा है। और वह रोता है।

और हेज़ल ने पूछा, तुम क्यों रो रहे हो? और उसने कहा क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे लोगों, इस्राएल के साथ क्या करने जा रहे हो। क्या वह उसे ऐसा करने का आदेश दे रहा है? नहीं। वह बस देख रहा है।

अरे यार। यही तो होने वाला है। और मुझे लगता है कि हमें यहाँ सावधान रहने की ज़रूरत है।

परमेश्वर उन्हें ऐसा करने का आदेश नहीं दे रहा है। लेकिन एलीशा कह रहा है, मैं देख रहा हूँ कि तुम ऐसा करने जा रहे हो। परमेश्वर तुम्हें मोआब देने जा रहा है।

और मैं देख रहा हूँ कि तुम क्या करने जा रहे हो। मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि व्यवस्थाविवरण में परमेश्वर द्वारा दी गई कुछ आज्ञाओं के प्रकाश में, यह वह काम नहीं है जो परमेश्वर चाहता है कि वे करें। लेकिन परमेश्वर द्वारा दिए गए पूर्वज्ञान के साथ एलीशा देखता है कि वे ऐसा करने जा रहे हैं।

मुझे इस बारे में बात करने के लिए कुछ समय चाहिए। सिर्फ इसलिए कि भगवान हमें कुछ करने की अनुमति देता है, इसका मतलब यह नहीं है कि हमें वही करना चाहिए। आपके जीवन में हर खुला दरवाज़ा ज़रूरी नहीं है कि आपको उसी दरवाज़े से गुज़रना चाहिए।

और कभी-कभी हम इस खुले दरवाज़े को देखते हैं और कहते हैं, ठीक है, बेशक, चूंकि भगवान ने मुझे यह संभावना दी है, इसलिए मैं इसे करूँगा। लेकिन भगवान चाहते हैं कि हम उनके संपर्क में रहें और कहें, भगवान, क्या आप यही चाहते हैं? क्या आप अपने जीवन में यही हासिल करना चाहते हैं? क्या आप मेरे माध्यम से यही करना चाहते हैं? सिर्फ इसलिए कि यह संभव है इसका मतलब यह नहीं है कि यह कुछ ऐसा है जो भगवान चाहते हैं। और इसलिए, वे जाते हैं।

निश्चित रूप से, मोआबी लोग नीचे आते हैं और इस घाटी को देखते हैं। सूरज चमक रहा है, और पानी पूरी तरह लाल है। और वे कहते हैं, ओह, वाह, इस्राएली और यहूदी और एदोमी, सभी एक दूसरे के साथ तनाव में हैं।

वैसे भी, वे झगड़ चुके हैं, और उन्होंने एक दूसरे को मार डाला है। जल्दी करो, चलो लूट का माल निकालो। और उन्हें पता चलता है, नहीं, तीनों पक्ष झगड़ नहीं रहे थे, और वे उनका इंतज़ार कर रहे हैं।

इसलिए, मोआब हार जाता है, और वे पूरे देश में यात्रा करते हैं जब तक वे अंततः राजधानी शहर तक नहीं पहुँच जाते। मोआब का राजा उन्हें भगाने की पूरी कोशिश करता है लेकिन असफल हो जाता है। अंतिम उपाय के रूप में, वह शहर की दीवारों पर अपने ज्येष्ठ पुत्र की बलि चढ़ा देता है।

और पाठ में यह कहा गया है। इस्राएल के विरुद्ध क्रोध बहुत बढ़ गया था। वे पीछे हट गए और अपने देश लौट गए।

खैर, जैसे कि आपको हैंडआउट मिल गया है, मैं बताना चाहता हूँ कि टिप्पणीकारों के बीच वास्तव में इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि यह क्या कह रहा है। यह इतना अस्पष्ट है कि कई संभावनाएँ मौजूद हैं। एक यह है कि इस भयानक घटना से इस्राएलियों को इतना सदमा लगा कि उन्होंने लड़ने की इच्छा खो दी।

ध्यान दें कि इसमें कहा गया है कि वे पीछे हट गए। इसमें यह नहीं कहा गया है कि वे हार गए। दूसरा सुझाव यह है कि यह यहोवा है जो क्रोधित है।

वह इसलिए क्रोधित है क्योंकि योराम की जल्दबाजी भरी कार्रवाई के कारण यह अत्याचार हुआ है। दूसरी संभावना यह है कि मोआबियों ने बहुत ही उग्रता दिखाई। और इस्राएलियों को इस बात पर इतना सदमा लगा कि वे फिर से पीछे हट गए।

लेकिन इन सबमें मुख्य बात यह है कि कठिनाइयों, त्रासदियों में परमेश्वर का उद्देश्य अंत में अच्छाई उत्पन्न करना है, क्योंकि वह अपनी देखभाल और अपनी योग्यता प्रदर्शित करता है।